K. Nand Semester - 1st Session - 2021-22 Date 03/10/2021

Expt. No.......... Page No. 01

CC - 2 - Advanced social Psychology

Unit - 1

Q. समाज मनोविज्ञान का स्वरूप तथा क्षेत्रों का वर्णन करें।

समाज मनोविज्ञान का स्वरूप

(Nature of social Psychology)

समाज मनोविज्ञान की भिन्न-भिन्न परिभाषाओं के विश्लेषण (analysis) से इतना स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि इसका स्वरूप काफी जटिल है। समाज शास्त्रियों (sociologists) तथा मनोवैज्ञानिकों (psychologists) के विचारों के आधार में समाज मनोविज्ञान के स्वरूप में निम्नलिखित बातें उल्लेखनीय हैं —

(क) समाज मनोविज्ञान: एक शुद्ध मनोविज्ञान (social psychology: a pure psychology) - समाज मनोविज्ञान के स्वरूप पर विचार करने से पता चलता है कि यह एक शुद्ध मनोविज्ञान या मौलिक विज्ञान (basic science) है, कारण, यह शुद्ध मनोविज्ञान अथवा मौलिक विज्ञान की शर्तें (conditions) अथवा अभिधारणाओं (assumptions) को पूरा करता है यथा -

(i) शुद्ध मनोविज्ञान की एक अभिधारणा या शर्त यह है कि इसमें विषय-वस्तु (subject matter) का अध्ययन क्रमिक रूप से (systematically) किया जाता है। इस अध्ययन के लिए आवश्यकता के अनुसार प्रयोगशाला प्रयोग (laboratory experiment), क्षेत्र प्रयोग (field experiment) या क्षेत्र अध्ययन (field study) का व्यवहार किया जाता है। शुद्ध मनोविज्ञान की यह विशेषता समाज - मनोविज्ञान में भी पाई जाती है। यहाँ भी आवश्यकता

Teacher's Signature : .... P.T.O

2 कृ 80/2 25
150

K Nand I Sends

के अनुसार क्षेत्र-प्रयोग या क्षेत्र-अध्ययन का व्यवहार करके सामाजिक क्रियाओं या घटनाओं का निश्चित अध्ययन किया जाता है। इस आधार पर समाज-मनोविज्ञान को शुद्ध मनोविज्ञान या मौलिक विज्ञान कहना युक्तिसंगत (justified) है।

(ii) शुद्ध मनोविज्ञान की दूसरी विशेषता यह है कि इसमें परिकल्पना (hypothesis) या परिकल्पनाओं (hypotheses) की जाँच की जाती है। किसी अध्ययन-विषय के सम्बन्ध में कोई परिकल्पना बनायी जाती है, फिर निश्चित अध्ययन के आधार पर उसकी जाँच की जाती है। सामान्य मनोविज्ञान (general psychology) एक शुद्ध मनोविज्ञान है जिसमें प्रेरणा (motivation) से संबंधित परिकल्पना बनाई जा सकती है कि सीखने के लिए दण्ड से पुरस्कार अधिक लाभदायक है। फिर प्रयोग द्वारा इसकी जाँच की जा सकती है। यह विशेषता समाज मनोविज्ञान में भी पाई जाती है, यहाँ सामाजिक क्रियाओं के संबंध में परिकल्पना बनाई जाती है तथा उसकी जाँच निश्चित की जाती है। जैसे, परिकल्पना बनाई जा सकती है कि सामाजिक व्यवहार लक्ष्य-निर्देशित (goal directed) होता है और उसकी जाँच निश्चित रूप से की जा सकती है। अतः इस आधार पर भी समाज-मनोविज्ञान शुद्ध मनोविज्ञान होने का सही दावा कर सकता है।

(iii) शुद्ध मनोविज्ञान की तीसरी विशेषता यह है कि इसमें अध्ययनों के आधार प्राप्त परिणामों के आलोक में सिद्धान्त बनाया जाता है। जब परिकल्पना सही प्रमाणित हो जाती है तो उसे सिद्धांत के रूप में मान लिया जाता है, जब परिकल्पना सही सही प्रमाणित हो जाती है तो उसे सिद्धान्त के रूप में मान लिया जाता है। थॉर्नडाइक (Thorndike, 1898) ने बिल्ली, चूहे आदि पशुओं पर प्रयोग करके इस परिकल्पना को प्रमाणित कर दिया कि सीखने का आधार तत्परता, अभ्यास तथा प्रेरणा है। अतः इसे सिद्धांत के रूप में

K Nand I Semis

जाता है। इस अर्थ में यह असामान्य मनोविज्ञान (abnormal psychology) आदि शुद्ध मनोविज्ञानों से अभिन्न (similar) तथा शिक्षा - मनोविज्ञान (general) psychology), बाल - मनोविज्ञान (child psychology) असामान्य मनोविज्ञान (abnormal psychology) आदि शुद्ध मनोविज्ञान से अभिन्न (similar) तथा शिक्षा - मनोविज्ञान educational psychology) औद्योगिक मनोविज्ञान (industrial psychology) आदि व्यावहारिक मनोविज्ञानों applied psychology से भिन्न (dissimilar) है।

(2) → समाज - मनोविज्ञान: एक व्यावहारिक मनोविज्ञान (social psychology: an applied psychology) - समाज - मनोविज्ञान के स्वरूप के सम्बन्ध में एक उल्लेखनीय बात यह है कि यह एक ओर शुद्ध मनोविज्ञान है और दूसरी ओर व्यावहारिक मनोविज्ञान है। शुद्ध मनोविज्ञान के रूप में इसकी व्याख्या ऊपर की जा चुकी है, अब व्यावहारिक मनोविज्ञान के रूप में इसकी व्याख्या यहाँ की जायेगी। व्यावहारिक मनोविज्ञान उसे कहते हैं, जिसमें व्यावहारिक समस्याओं का समाधान किया जाता है। जैसे बालकों की शिक्षा को कैसे सफल बनाया जा सकता है, कुछ शिक्षा में क्यों पिछड़ जाते हैं, वे पढ़ाई क्यों छोड़ देते हैं, प्रतिभाशाली, मानसिक दुर्बल तथा सामान्य बालकों के लिए शिक्षा - कार्यक्रम कैसा होना चाहिए, आदि व्यावहारिक समस्याओं का समाधान शिक्षा - मनोविज्ञान करता है। इसी तरह औद्योगिक मनोविज्ञान (industrial psychology) व्यावहारिक मनोविज्ञान है जो उद्योग से सम्बन्धित व्यावहारिक समस्याओं का समाधान ढूंढता है।

इस दृष्टिकोण से देखने पर पता चलता है कि व्यावहारिक समस्याओं का समाधान किया जाता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इस हैसियत से उसको कई सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है

120
45
28
193।

500 160

K. Nand I. Saig

Date..................

Expt. No.................. Page No..................

मान लिया गया है। फेस्टिंगर (Festinger) ने मनुष्यों पर प्रयोग करके उस परिकल्पना को प्रमाणित कर दिया कि संज्ञानात्मक असंवादिता (cognitive dissonance) के कारण मनोवृत्ति बदल जाती है। अतः इसे एक सिद्धांत के रूप में मान लिया गया।

(iv) शुद्ध मनोविज्ञान की चौथी अवधारणा या विशेषता यह है कि इस में नियमों (Laws) का निर्माण किया जाता है। जब भिन्न-भिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त का प्रमाणीकरण (verification) हो जाता है तो उसे एक नियम का रूप दे दिया जाता है। थॉर्नडाइक ने सीखने के तीन नियम अर्थात तत्परता-नियम (Law of readiness), अभ्यास-नियम (Law of exercise) तथा प्रभाव-नियम (Law of effect) का निर्माण इसी तरह किया। यह बात समाज-मनोविज्ञान में भी है, जैसे संज्ञानात्मक असंवादिता-सिद्धांत (cognitive dissonance theory) के प्रमाणीकरण के बाद फेस्टिंगर ने चार नियमों का निर्माण किया — (क) असंवादित संज्ञानों की संख्या बढ़ने से असंवादिता की ~~संख्या~~ बढ़ती है

(ख) असंवादित संज्ञानों के बीच भिन्नता की मात्रा बढ़ने से असंवादिता की मात्रा बढ़ती है।

(ग) संवादी संज्ञानों की संख्या संज्ञानों की बीच बढ़ने से असंवादिता की मात्रा घटती है, तथा

(घ) असंवादिता की मात्रा ~~बढ़ती~~ है, पर भिन्न-भिन्न संज्ञानों के महत्व का सापेक्ष प्रभाव पड़ता है। स्पष्ट है कि समाज-मनोविज्ञान में शुद्ध मनोविज्ञान की सभी अभिग्रहणाओं (assumptions), शर्तें (conditions) या विशेषताएँ (characteristics) पाई जाती हैं। अतः समाज-मनोविज्ञान वास्तविक अर्थ में शुद्ध मनोविज्ञान की एक

Teacher's Signature : P.T.O